Registration No. V-36244/2008-09

ISSN :- 2350-0611

The journal has been listed in 'UGC Approved List of Journals' with Journal No. - 48441 in previous list of UGC

JIFE Impact Factor – 3.23

Research Highlights

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor

Dr. Kamlesh Kumar Singh

Assistant Professor

Gaya Prasad Smarak Govt. P.G. College

Azamgarh

Volume - VII **No. - 2** **(April – June 2020)**

Published by

Future Fact Society

Varanasi (U.P.) India

बौद्ध धर्म के उद्भव में अधिशेष उत्पादन की संकल्पना का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अश्वनी कुमार यादव*
डॉ. विकास सिंह**

Abstract (सार)

बौद्ध धर्म के उद्भव व विकास में इतिहासकारों का एक समूह अधिशेष उत्पादन में वृद्धि को महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखता है। ट्रेवर लिंग का मानना है कि गंगा घाटी का क्षेत्र अधिक उपजाऊ था। उपजाऊ क्षेत्र होने के कारण इसने जनसंख्या संकेन्द्रण को बढ़ावा दिया। उपजाऊ भूमि व सघन आबादी ने अधिशेष उत्पादन में वृद्धि की जिसने नगरीकरण को प्रोत्साहित किया। बढ़ते नगरीकरण ने बहुत सारी समस्याओं को जन्म दिया और इन समस्याओं के सम्यक समाधान के रूप में बौद्ध धर्म का उद्भव व प्रसार हुआ।

ट्रेवर लिंग[1] का मानना है कि गंगा घाटी का क्षेत्र अधिक उपजाऊ था साथ ही यहाँ पर घनी आबादी भी थी। उपजाऊ भूमि और सघन अबादी ने नगरीकरण को प्रोत्साहित किया।

धन या पदार्थ जो उपयोग या व्यवहार के उपरान्त बचा रहे उसे अधिशेष कहते हैं। यही अधिशेष किसी भी समाज में विकास की गति हेतु पर्याप्त कारक बनती है। जब हम विकास क्रम में परिवर्तन के लिए इसकी प्रासंगिकता की बात करते हैं तो इसे दो मुख्य भागों में बाटा जा सकता है।[2] पहला, अधिशेष उत्पादन उन भौतिक साधनों की मात्रा का प्रतिनिधित्व करता है जो तत्कालीन समाज की मूल आवश्यकता में अधिक प्रतीत होती है।[3] एम0जे0 हर्सकोविट्स[4] इसे परिभाषित करते हुए कहते हैं कि "आवश्यकता की अल्पतम माँग से अधिक वस्तुएँ तथा वी0 गॉर्डन चाइल्ड[5] के अनुसार सामाजिक अधिशेष "घरेलू आवश्यकता से अधिक खाद्यान्न" ही था। यह स्पष्ट किया गया कि इस तरह के अधिशेष ने जो कि तकनीक एवं उत्पादकता के विकास के साथ प्रकट हुए, सामाजिक और आर्थिक संगठन के एक स्तर को दूसरे स्तर से अलग किया। दूसरा, अधिशेष उत्पादन को महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक घटनाओं का आधारभूत कारक माना जाता है।[6] व्यापार–वाणिज्य, बाजार व्यवस्था, मुद्रा प्रणाली, नगर नियोजन, सामाजिक वर्गभेद और तो और स्वयं सभ्यता तक इस प्रकार के अधिशेष की उत्पत्ति के परिणाम माने जाते हैं।[7] उपर्युक्त कथन की विशेषताएँ स्पष्टतः संकेत देने लगती है कि जीवन–निर्वाह का एक स्तर (Subsistence level) होता है और एक बार उस स्तर तक पहुँच जाने पर उसके ऊपर अधिशेष उत्पन्न होता है।

समाज की आवश्यकताएँ कैसी भी हों, यह अधिशेष सदैव उससे ऊपर ही होता है और यही अधिशेष का उपयोग अन्य पदार्थों में हो सकता है जैसे कि इनकी बिक्री करना, दस्तकारों को उनके कार्य के पारितोषिक रूप में देना या फिर समाज के अन्य वर्ग जो कि उत्पादन प्रक्रिया में शामिल नहीं है उनके भरण–पोषण में प्रयुक्त किया जा सकता है।[8] जब हम इस अधिशेष को दूसरे अन्य रूप में देखने का प्रयास करते हैं तो पाते हैं कि, यह बहुत ही जटिल सामाजिक तथा आर्थिक संस्थाओं के उदय में मुख्य परिवर्तनीय कारक बन जाता है। लेकिन, चूँकि अधिशेष शब्द" जीवन–निर्वाह हेतु आवश्यकता से अधिक अतिरेक" को बताता है, अतः अब हमें जीवन–निर्वाह की आवश्यकताओं को परिभाषित करने की जरूरत है। इन आवश्यकताओं की सुनिश्चितता को सामाजिक रूप से या जैविक रूप से किया जा सकता है। किसी एक व्यक्ति की क्या न्यूनतम जीवन–निर्वाह हेतु आवश्यक है, जब हम इसके निर्धारण का प्रयास करते हैं तो वही कठिन हो जाता है, तो ऐसे में सम्पूर्ण–समाज की न्यूनतम जीवन–निर्वाह की आवश्यकताओं को तो निश्चित कर पाना संभव प्रतीत नहीं होता है। सह भी सार्वमान्य है कि सभी समाज की आबादी का एक बड़ा या छोटा हिस्सा ऐसा होता है जो कि जीवन–निर्वाह के स्तर पर जीवन व्यतीत कर रहा होता है और जिस तेज्ञानिक रूप से पर्याप्त नहीं समझा जाता है। इस सब के बावजूद, तर्क के लिए हम यह कह सकते हैं कि यदि जीवन–निर्वाह की आवश्यकता का जैविक रूप से निर्धारण हो सकता है, तब अधिशेष, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरान्त ही उत्पन्न होता है निताल अधिशेष (Absolute Surplus) होगा। इसका अर्थ यह है कि अधिशेष वह मात्रा होगी जो जैविक रूप से जरूरी आवश्यकता के अतिरिक्त

* शोध छात्र (जे0आर0एफ0), प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर (उ0प्र0) E-mail – ashivanijaunpur@gmail.com, Mobile – 9169330421
** असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर

पाते हैं कि कमोवेश यही स्थिति आज भी देखने को मिलती है)। उत्खनन या साहित्यिक साक्ष्यों में किसी भी बड़े गोदाम या अनाज भण्डार गृह का उल्लेख नहीं मिलता है। इसलिए हम ऐसा भी अनुमान लगा सकते हैं कि नगरीय क्षेत्र खाद्यान्नों की मौसमी आपूर्ति पर आश्रित थे और आपतिकाल में ग्रामीणों तथा सर्वसाधारण वर्ग को ही इस परेशानी का भार उठाना पड़ता था। इसलिए महत्वपूर्ण यह हो गया था कि सामाजिक–राजनीतिक संस्था कैसी थी न कि अधिशेष। यही संस्था ही कृषकों से उनकी उपज का कुछ हिस्सा उन्हें देने के लिए विवश कर देती थी। जिन क्षेत्रों में अभाव हो जाता था वहाँ पर इस अधिशेष को भेज दिया जाता था और यदि नजदीकी भूभाग की फसल खराब हो जाती थी तब सुदूरवर्ती क्षेत्रों से (पुनः जबरन या लिहाजवश) खाद्य पदार्थों की पूर्ति के लिए ऐसी ही संस्था की आवश्यकता थी। कृषकों से कर कराधान व नजराने की वसूली के लिए एक ऐसे प्राधिकरण की आवश्यकता थी जो वसूली में जबरदस्ती भी कर सके। उसी प्रकार व्यावसायिक व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाये रखने के लिए एक वाणिज्यिक संस्था की आवश्यकता थी। इसलिए पूर्वापेक्षा एक काल्पनिक अधिशेष न होकर एक प्रशासनिक तथा वाणिज्यिक संगठन है – शासक तथा व्यापारी, दोनों ही नगर के होते थे जो प्राचीन काल में भी एक दूसरे के सहायक थे। अतः अधिशेष एक तकनीकि उत्पाद न होकर एक सामाजिक उत्पाद था, "संगठन ने अधिशेष को उत्पन्न किया, जो कि उस क्षण नहीं होता है, जिस क्षण तकनीकि रूप से यह संभव है, परन्तु यह कर, व्यापार, तथा अन्य साधनों द्वारा संगठित होने मात्र पर ही संभव होता है।[14] गैर कृषिगत पहलू वसूली की तरह अधिशेष उत्पादन में भी प्रमुख होता है।[15] इन सब के अतिरिक्त हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि जनसंख्या वृद्धि के जो प्रोत्साहन कारक थे जैसे कि बालश्रम को उत्पादन प्रक्रिया की शुरूआत में लगाना, बंजर व निष्क्रिय भूमि का कृषि क्षेत्र में विस्तार करना। जब कृषि भूमि का विस्तार होता है तब कृषि पर निर्भर आबादी में भी विस्तार होता है। अतएव हम यह भी कह सकते हैं कि दास व बँधुआ मजदूर (विष्टि) अधिशेष उपलब्ध कराने वाले अन्य साधन हो सकते थे। जब हम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अविष्कार की बात करते हैं तो इसका संबंध 3000 ईसा पूर्व के तुरन्त पहले के 1000 वर्षो के दौरान हुए। इसलिए नगरीय व प्राक्नगरीय अवस्था के बीच महान परिवर्तन, मूल तकनीक के बजाय जीवन–क्षेत्र में हुए। "बाद की तकनीकि श्रेष्ठता का उन प्रक्रियाओं से कोई खास सम्बन्ध नहीं था जो नगर को अस्तित्व में लाई।[16] सही अर्थों में हम यह भी कह सकते हैं कि नियमित सेना, अनुमानतः जिस हेतु खाद्य पदार्थों को संग्रह करना जरूरी था, वह मगधराज अजातशत्रु की विस्तारवादी नीति के आरम्भ तक अस्तित्व में नहीं आई थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. लिंग ट्रीवर ओ0, द बुद्धा बुद्धिस्ट सिविलाइजेशन इन इण्डिया एण्ड सीलोन, लंदन:टेम्पल स्मिथ,1976:पृ0 104–117
2. पोलैनी के0, ट्रेड एण्ड मार्केट इन अर्ली एम्पायर, ग्लेन्को, इलिनॉइस : द फ्री प्रेस, 1957 : पृ0 320–341
3. सराओ के0टी0एस0, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म:उद्भव, स्वरूप एवं पतन, सी0बी0बी0ई0एफ0, ताइपे, 2005, पृ0 72
4. हर्सकोविट्स एम0जे0, इकॉनॉमिक एन्थ्रोपोलॉजी : ए स्टडी इन कम्पैरेटिव इकोनॉमिक्स, न्यूयार्क, अल्फ्रेड ए नॉफ पब्लिशर्स, 1952 : पृ0 395
5. चाइल्ड वी0 गार्डेन द बर्थ ऑफ सिविलाइजेशन : पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट भाग–2, 1952 : पृ0 3
6. सराओ के0टी0एस0, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म:उद्भव, स्वरूप एवं पतन, सी0बी0बी0ई0एफ0, ताइपे, 2005, पृ0 76
7. चाइल्ड वी0 गार्डेन, व्हाट हैप्पन इन हिस्ट्री हर्मोण्ड्सवर्थ : पेलिकेन बुक्स, 1942 : पृ0 1–10
8. सराओ के0टी0एस0, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म : उद्भव, स्वरूप एवं पतन, सी0बी0बी0ई0एफ0, ताइपे, 2005, पृ0 79
9. पोलैनी ई0के0, ट्रेड एण्ड मार्केट इन द अर्ली एम्पायर, ग्लोन्को इलिनॉइस : द फ्री प्रेस, 1957 : पृ0 326–35
10. सराओ के0टी0एस0, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म:उद्भव, स्वरूप एवं पतन, सी0बी0बी0ई0एफ0, ताइपे, 2005, पृ0 81
11. तत्रैव, पृ0 81
12. तत्रैव, पृ0 82
13. तत्रैव, पृ0 82
14. हाउसर पी0एम0 एण्ड एल चेनोर हाउसर,द स्टडी ऑफ अर्बनाइजेशन, न्यूयार्क:जॉन विली एण्ड सन्स, 1965:पृ0 270
15. घोष ए0, ऑब्जरवेशन आन चक्रवर्तीज पेपर, पुरातत्व नं0 6, नई दिल्ली : इण्डियन ऑर्कियोलॉजिकल सोसाइटी 1972 : पृ0 21
16. एडम्स रॉबर्ट मैक्कोर्मिक, द ओरिजिन ऑफ सिटीज, साइंटिफिक अमेरिकन, 1966 : पृ0 153–172